धाम प्रकाश   विरासति   फिर॥

नेन विलोकित करकरै जाव नाना हि पाच वस्तु हिय चहिये। धाम रहस्य रसाहित्य रसमाज ४। समयो पद्धति गहिये
इनके विनति श्रवपकिये नरमें जैन कुञ्ज रूप मरसयाके लिये वद नन वनगति सुरुछ ५। प्रथम अत्र वषि जो कही
सप्तक द्वानि हि गाये पांच कोट तक प्रजाव सतत्व नमितसुखच्छाये ६। ते से षष्ट ममां कृजानि सबंधी लोगासियारा
प्रमेन वल नेह धरि जोगन जोगा॥ वात्सल्य दोउ दिशा नके तेउ वलल लनवुलात ७॥ उनको चेतन व खर्च लखि ईड
...लजात ८। श्री में इनको अकथ नेह सो कह्यो नजाई। ते ये सप्तम कदामुंकर विवंधी जाई ९। इहि विधि येते ये
कहे कछुक आगे अप्रजान १०। राजकुंगोनि हि नाम को रेडु कउक्त रमानु ११। तामे चकुद्दिशा कोवर्ने मनिक्क तपवे
त्चारि वेद मितगाथ तिनतेंन हेलटनीमन हरवारि १२। नव वन नव नैं त हामनो हरखु गमगासं जुन १३। मद्रवंदजो
कघोसबनके मध्यमधुपनुत १४। तहां नृपतिके नवन मत कहा दश परिमाना १५। खणे अद्रिसमसमक दन हि
परे बखाना १६। वीचि महा हैराय की पूरब दिशा अनूप १७। तापी छै रानी नकी रूप सरस सुख रूप १८। कोश अल्पाको
नवन मध्य दिशि उत्तरसु मित्रा १९। केकई आसा दखिन गेह सुचिन वल चित्र विचित्रा २०। तीन सदन पह पूर्व तर्फ जो कहि
अति सुंदर २१। तिन के आगे सभा देखि विति हि लजे पुरंदर २२। तंह सिंहासन बनजहो श्री महारानी आय २३। वाम सुमित्रा
सोहई २४। केकई दखिन लखाय २५। श्री महारानी सिया अंक निज धरे दुलारे २६। त्रिदिशा वर आरुष्ठ त्र सखी अन

पर   रस   कुबेरसह   लरिनतह   गृहप्रति   बनितप्र   करहिग

वर॥   ॥पुनि

पत्नीतह जल॥ ॥जह

सि॰ वं॰ २

मितकरधारे। अपरशनिमंडलाकारसोहतइमिजानं। गुरुपत्नीतहआजिरहीउछासनमानं। पुरवनिता
वकुआतहेछरीदारकहिआजि।रस्नाउवैसिसेनेकादिकगावनमुदमाजि।१४। ऐसेहोवतमजादिवसइक
पहररहैतव। निसापूर्वअधयामआनमुजराकेहितसव। याकेआगेकदलागिनपसजामलूनीकल्पवृ
क्षहिगारत्नसिंहासनकंजदलूनी। शीर्षकसवलोकानकेराजनश्रीमहाराजिंद। द्विणजानुसमीपलविराम
नइमुखमाजि।१५। वामजानुस्थितपालहमणजूवलसागार। नरतमनुहनतहांजानिइमिवकुनयनागा
रइमिआगोश्रीवसिष्ठादिस्वस्तीवदिजाजे। मुनिमंडलकेअग्रसुमंतादिकमतिसाजे। मंत्रीमंडलतेलसेअ
ग्रसूर्यकुलजात। इहिमंडलतेअग्रमुनिनृपअनंतसुहात।१६। विषिआदिकवसुलोकपालकरजोरिरहेज
वि। छरीदारवेढानगानगंधर्वनटीनचि। ऐसेगाईरातिवकुनखुजैवहिजाईतनी विननहिजमेताहितेदई
जनाई। चहूंवंधुचकुहिप्रागयेनवनसिपादिकसाथ। मानकहउत्यधिकेतिनकीकहूंजुगाथ।१७। सानकद
नपजवननामुकारचर्णमुनिपे। वाह्यदेशतेंकहूंप्रथमएरवहीगुनिपे। प्राचीदिशाकेआदिकोटरहेमागध
मतार। नटपरदेशीदेशाकेहआनमितइनकेघर। दूसरमेगुनिजनृतथानीसरपंडित [illegible] हुमंतादिमंत्रीवि
मलवाथेमाहीपेवि।१८। ज्ञानवृद्धआयुवयोवृद्धपंचसमेगाये। श्रीवसिष्ठमुनिराजआदिषष्टमसेछापे। सम

तव सुचि॥तस्वि पुनि॥निज

जवसुत पुनि इ

यत जनरस्वता॥प्रद

स्वल्पगति।जित

मातुप्रति। ।स्तुति

मरानीजवन विपुल जानकुमन हारी। ऐसे मे पूरव दिशा कहे वर्ने सुखकारी॥ अव आसाढ क्षितिकहुं वा घटे
पुत्ते [illegible] नरनृ शत्रुहन लखिन पुत आवत जिहि मग [illegible]॥१९॥ प्रथम कहे मे पाक सालजानकु व कुंतानी
द्वितिय कहे मे समल्य गोहसो वहि सुत पानी। त्रितिय माऊ वसु धातुरीति अनमिति विधिगाई। पुनि तुरीयमे मि
त्य साल्यगति विमल सुहाई पंचम मे मनि काम्हे। षष्टम वस्त्र अनूप॥ सप्तम मे विद्या विपुलजानकु राग
स्वरूप॥२०॥ पुनि पश्चिम दिशा प्रथम कहे गज वाहर तैगानि। द्वितिय अश्व तिमि त्रितिय पद्म पद्मवो थेसुर जीदुमि
पंचम महिषी कही। षष्टमे पसु पक्षी सुचि। क्रीडा कार कमसप्तमां करानी कीलखिहरुचि॥ अव सुनि उत्तर दिशि
जितेरूप मरसम पिपअम्रा दि॥ आवहि लालन लाखन जूजिहि मग माताकीरण॥२१॥ प्रथम सुपरिश्रित ति पाल सेन
पक्षी तनन्न पित दूसरवै नवजा निइन हि को अमित अदूषित तीसर कहे तथा वाम चोथे केन वपुनि पंचम
मे रंध्री जुवं सरा। विनसवहि गुनि वे नवइन कोषष्टमे वासवधूमनवे जु। तिनको वेनवत हां हीमध्पमहल वि
षिते जु॥२२॥ मध्य भवन निहि नातिक है सो पुरक हु गाई। नद बंदवन मुख्य सवनके मांझ सुहाई। ताहि चित्र मे
नप तिसदन जानकु मुखकारा। पाके पश्चिम दिशा सुहावन अतिछुविधारी॥ सौराजि कवन नामसे हे तहारा
के ख्यात। विक्रम रथ यपशरथ जिन संज्ञा जगविख्यात॥२३॥ तिनदोउनके नवन तहां जानकु पुत वैनव। तिय

जह
संग।तिति
कहि
सरिन
वरातिमि
सुरिव
लखिपुनि
य

रहा।लखि यह। ।तिहि

॥जति तहा॥तिमि जहा॥

सुत सेवक वाहन आदि सोहत जह तह ठव। सो तस आश्रम नजानि यमुं के दखिन दिसि कौं। अघक अति हि सा ऊवने नपवन
मुनि रिषि कैं। श्री वसिष्ट वाल्मीक श्रोमुनिश्रम गास पज्ञत ज्ञात। सिष्य सुति हुगणादिक तथा नारदा ज मुहा त। ध। वा
मदेव श्रोपाशव कोगो तमहारी तजु। विश्वामित्र ह पुलह व्यास सुक त्रिश्चजु। प्रथक रहे वा गडनू के कहें वठे श्रातिसि
पाराम की कतनु पासजानि विमल सति। श्रन्य रूप धरि श्रावनित लव नेहि यं पश्च नेक। चतुर्वर्ग दायाकि ते कि यास्त
की सविधि कं। २५। यह दछिन श्रोपाहि मदिपुग्र की कोन लखायो। श्रव उत्तर श्रो पश्नी चिविविधि मुनि ये जो गायो। तहाचि
पिन वड तासु नाम सो श्रेरक ही जे। तामे स्फाटिक को रचित्रे श्राति न वन लखीजें। पति मद्रसदे नव सकल वसुम
त्रितके धाम। जिन्न २ ध्वजन कलस तेजन्न नत लगे तल लाम। २६। नाम सुमंत १ धर्मपाल २ श्रष्टा ३ जयंतजु ४। विजयी
प। तथा सुराष्ट्र ६। राष्ट्रवर्द्धन ७। श्रकोप जु ८। यह मंत्री वर श्राठ यहा वसहि इमि जानू। श्रव सुनि नृपके नवन तासु ते
दछिण मानें। चित्रक वन … तिहि नाम है रत्न जटित तरनू मिं। विगास गान्नु पित सर कमल छवि श्रनूपम भूमि। २७।
समक छ को नव नवडे चकृ छि … प्रवक धारा रचित जो ना कुवी रमां कवकु नाति श्रगारा। स्यंदन गज नव श्रश्व सकि
त पालक यह राजै। गावया दिक सग विपुल पठित नू पित छविका जै। पर देपाश्च्छा तथा क दहे प्रथम श्रनूप। दूस
र को टवखा निये श्रति सपमो नारूप। २८। चतुकार पेसो विद्ह्व तिपर द्दिपहां। तेवधु वन के तह जिन्न २ वन वने

सि॰ चं॰ ३ ना गति॥सव जह सुचि रचि॥सो प्रथम … दशा॥सुं

वर॥ ॥जह

फबि॥लखि कवि॥ जह॥

सुहाते। नांतिरसरम्है। तर चितदूसरके मांही। अवनीसरकी वातमुनं जह रस ग्रह आहीं। पाक वस्नानसुजनसद न चंद
नादि अरु धान्य। इनके नव वनति कायजहसवक हिकोनसकानु॥ २८॥ चोक्षमैमेमो विद्रुन्नर हितसज्जासदन है। पुनि पंच
मके माहिं वृधुनकी सज्जा विपुल है। षष्टम सप्तम मांऊ नवन प्यारिनके कहिये। मध्य नाग श्रुति कीर्ति तहां सत्रूह
नरहिये। गाँन वाद्य धुनि होत है रमत प्रिया अरुपी यँ। नव वन कुश ध्वजनंद नी दशरथसुत कमनीय॥ ३०॥ इति श्रुति
कीर्ति सुत्र प्रस्तवन वर्नन। अथ मांडवी तरतवन। अग्निकोण मैं। प्रीचीद क्षिनदिशावी चिवन। नाम चित्रघन। पद्मी
नादि तकरुत्र अमर गुंजार सोहत। क्रीडनमान क्रमगन तैंजु नत्पत जन्तु वहीं। गावत कोकिल संग पुस्पसित मस्का
णित हीं॥ अम्ली लपी नादि ज्यों कुसम न नपितदेखि। कुकि तथनि मोवेठनं कुंजनातु ग्रहपेखि॥ ३१॥ स्फटिमान मोत
डागादितें निपेलत ताजिषि है कुटं व सोइ जंतु संघल रविपथा रुप्रति हि। ताके मध्य अनूपन्न वनकत्ता भूमि निमित है। प्र
थम कोट मेरथ विमान नाजपुत्त साहि है। हयँ महिषी गोपाल की गवयादिक मृग युत्थ। छिति पमां ऊ तिपम हल्लत
हक रिमवीतु नवहत्थ॥ ३२॥ त्रितिय मा ऊरम पाक नवनधान्य वस्तु जानं। वोथे मे चक्र दिशा मन्त्रा ग्रहवारि प्रमान॥
पंचम में तिय सन्ना गेह वरनें दिन्ना गकरि। षष्टम सप्तम मध्य प्रियन केर दृष्य नवनठ हि। मध्य नाग श्री मांडवी
नरन तहां पुत्त प्रेम विहरत वक्र विषिया मव सुरागरंग मय देम॥ ३३॥ इति श्री मांडवी नरनतला नन्नवन कल्पद्रं

संग।सो त जनु।तरु रवि।इमि जह

नराानिति ८२

तह

प्रति

दवनकहेप्रथमहीएरवद्विजसो। सन्मुखखालीरखिकेहेतुचक्रआवनमगसो। अवअंतरद्विविधिचित्रसारवचन
नामकहीजे। द्विविधिनातिकेअवदविपुलकपिफिरनलखीजे। कूपवापिकाचक्रमणिमगनभूषितकरचर्नागव
परसिंहवाराहविनवेरलसैमनहर्नें। ३४। तत्रश्रीआंगमिलाललसत्कन्नवन। समकोंजिहिअञ्चचतुरत्तिहिपारसुहाये।
कांडएएजनर कविदेशानपरातआपि। मल्लरुनटजेआनमकलतेरहतमिलनहित। चतुदिशागजवाजिवृष
नमहिषीगौयाकित। पौलकयहपुतपालककीउहूपरथाविधिजो। निकन्याक्रीडनअर्थकेपसुपछीअतिमानि। अ
दूसरकहाँमाहिवेद्विकारचिप्रमदावन। वापीकूपतड़ागमहेलचक्रपद्मीमोहन। नीसरमाहीवसनन्नृपनरुधा
तंगह। मणि। सेतिनकेकामकरतअनुचरअतिनिहा। पाकशालचोथेनृखेपंवमरानामकार्य। सप्तमसनावधून
कीसतिरहस्पविधान। ३५। इतिश्रीअंगमिलाललसनलालनवनकिंचित्वर्णनं। ऐसेकिंचितद्वयेसवनिकेधामअ
नाई। विचारकहैंहिपमांक्ररहतसंसपकछुछाई। मातनवनसिपराम्रआतनिहिहितयहगायो। मगयामगकेका
नअवधिपुरनेदलखापो। कोनदिशातेंआयकेसंगहौंपत्रयन्नातं। रूपसरसपाकेलियेवरनेमवकुशलातं। ३६
अथसंकोचाभिप्राय। ननननावनाभगउचारियेवाधकनानं। नपलकआय२विद्धेप२रसाज्ञाचहि४पुनिमान्
लपनोनिद्रान्आलसादिजपध्यानछुडावें। विद्धेपर२औरकीवातसुनेंमनकोंवहकावें। कहिकथापजोमनऐसे

८

जनाजनप

वनितावनि

ज्वन
कपनव
पाजन

॥पुनि

क्रमा॥

२

नृपातिहि

पुनि

३

अप्रसाल खि   जसा

दीखपरे कछु आन॥ दुहनु जैसे जंबूनद नर्जजहि पेमुनि लसणाभा॥ ३८॥ रसाजास षपु निज्ञानि करत चित वन जो कोई
सिपारस केन पुनुरीति पंकज सम जो ई॥ कंज दोष तह लख नल्गोत जिद्रग अनूपन्तु वि। ताते जानकु चारि पहे वाष
कघर नें कवि। अवसु निजाके हेतु पह की नेंम सकल वरवा न॥ पूरव अत्तरवी विजेपो कूएणर हाई शांन॥ ३९॥ अथ श्री सी
ताराम नवनवनेंत॥ कोशलेंद्र के नवनते जुई षान कूणगात। अंपार नाम वन तहां नवल विस्तारि सोहत। फल पुस्प
फल युक्त सकल रितु मेम नहारी। लतापता न सुठपेव नी कुंजें सुखकारी॥ वर्णं २ के गुल्म सु चिचलर्दि पण चितचोर॥
पमर सअलि अलि निपुत अली अलंकृत मोर॥ ४०॥ लियें मयूरी संग सिखंडी सुंदर जहं तहं। नचत सोई मनु आ
पकलाणु एव्यति अनूप वहं। पिक स्वर नें जनु गायर होम निजन मनहारी। पक्षि तसुक न को शाद्धढ़ानि जसमृती
मचारी॥ खेलत तल खिमगपुत्य सनक्रीड नसहजसु नाय॥ ४१॥ पमरस सि परा मको सुखदन वलदन राय॥ धेर ऋषि
तनन गवप अदहि मधुर कलनद हिर सीले॥ वापु वहत तहं मंद गंधपुस्पन सी ली ले। ता लकू पवापी अनूपम
लि वंधेस्व क्त तय। धीर गेह पेंनी रहं समारस मिय पियरद। नीनरि विहर हिसुंदरी वाहर रत्तित वी॥ ४२॥ मे सवनमें
खिअ यंत्रसवन रचितन वा दुहीर॥ ४३॥ सप्तकोट कोन वनता सुकेच्छु दिसि कहिये। आपण विपएम अनूप जहं
क्रय विक्रय लहिये। परदेशी आदु देशा की जुची जे मनहारी। सिन्नु यं अनमित प्रकार व निहाटि अपारी। कवकूअ

जहं   तथा सखि   जित   सखि दिसि   छवि पुलि   गनि नव

मति   ते

छशितह करि

सि. चं
५

ईकहै प्रथम है वाराकलनारि। रूपसरससियराम जव आंवहि लेंहि निहारि। ४२। सियाराम केनव वन तैंजु पूरव
दिसि सुंदर। आम्रसाल अति कूहदवनी विचित्र घुर मंदर। तिनमें घोरे आति आनूं वकुदेपार के। तिन केपाल
क पाटकादि पहरा तिदेस के। वकुकनिमिपुरदासिकाम जिलावहि सिपम्हेलें। कदी माजस जिमव वलेस
गपा. लालनगोलें। ४४। तैसे पश्चिम दिसा लसे गजुसा ला नारी। अति उतंगा नतमम तंगा सित आसित आपा
री॥ तिनके सिहर करदकादि केगेहत हां है। होदा अंवावारियाजु वकुनों तिजहां है। ४५। अंतर दिसि तंजुरानियेसि
विकासा लअनूप। रूपसरस सियरामसुखि जांति सुखरूप। ४६। आव दक्षिण दिसा रही तहां रथसाला जानूं। व
र्ण वर्णके रलजटित आगानित विधि मानूं। तिनके माहि त्प साजसवे घोरे व्रषभादिक। रहक गोहनसाफ गाव
तेजसके खादिक। दीपज वाल अनंत तहि हिंना निरहैं। चक्र आरा। रूपसरस वरनें कहा वरि। आमित सतिधोर। ४६
रघुवर के दासीन दास मिथुलानेंपाये। सिय आदिक सवकवरि तिनूके तथा लगवाये। तिन की जीवनप्रान।
लली लाल नगुणसागर। ठोरर तिनके जुनवन तहवनें उजागर। जिनको वे नवदे खिकें ईडकुवेरलजातें। रूप
सरसवय गुण नैनवाणी रतिमनुजातें। ४७। असो सुंदर अतिसिंगार वन ताके मांही। सियाराम कोनवनको
ट जिहि समतल मांही। चित्र करि नाम वरवाने सो आवसुनिये। प्रथम मकदस्रो स्फटिक रचित उन्नतम नगुनिये।

दनि जिसि
समय॥जस
मति

प
गुनि
समय
मनति

रचि

स्तातपर्थ कहि   घरा॥

विद्रुममणि के कंगूरा बने मयूर ... । ताहि मयूरा वर्ण इहिं नाम केकिगल बखिस्यो ॥ ४८ ॥ छिति पनीलमणि जाल न
कंगूरा उपरि हंस ... रि है सावर्ण अनूपता मनि है कहो यंत्र बखाने । छिति पपीत मणि रचित नीलमणि कैं गुरा सोहै । वे
इमि
नक पोता वर्ण नाम सोता पर जो है । है चतुर्थ मणि स्याम को कंगूरा पीत । जिहि सुका वर्ण इहि नाम है रूप सरस
चुरि   कुसुक वहु
यह जगमग ॥ ४९ ॥ पिंगल मणि को रचित पंचम कोट सुहायो । मारस परितर स्याम मणि कंगूर दरसायो । ताहि मार
जह   रि॥
सावर्ण पासु को नाम कहीजे । षष्टम पाटल मणी रचित देवन छवि जीजे । वनै स्वेत मणि कंगूरा रूप सरस परिक
पोत निक
रि तासु पांडुर कपोता वर्ण नाम अनुरूप ॥ ५० ॥ सप्तम सुंदर हरित मणि ननैं रचित अनूपम जो या को चित धरै मन
सो हीरा सरूप मकनक कंगूरा बनै मध्य मणि रक्त परिसुक । ताही तें इहि अरुण सुका वर्ण है संज्ञा तुक मुनि मितक
जग। विति
ला ज्ञानि ये इन नाम न विख्यात रूप सरस सियराम नहर मन ते सखि यन भ्रात ॥ ५१ ॥ समक द्वके वीचि रमुदि नूमिवि
संग॥
माला । तहां लगी वक्र ज्यों ति पुस्प वाटिका रसाला । दुहूं तर्फ प्राकार लग्न यह पंक्ति विराजैं । कलस ध्वजा अरु तोरणा
। जह   प्रतितव
दितैं ज्ञ पितछाजैं मध्य । वक्रता तिन नवन वनैं कमनीय । रूप सरस मखि जानि तहें दृग जाति कितनी य ॥ ५२ ॥ कहुं
जा निव ननारकेल को कहुं दाख को । कहुं माल वन वन्यों कहुं वन केलि सारव को । ऐसे मानकु तिन्न रकरि अभि
ननाम है । रूप वापिका सरन सुक्रम सव ही अराम है । मणि न वंधे सोपान नट वेदी कहुं विचित्र । रूप म रस सखि जल
। जह   रखि नह

सखि

अमल सरजू पूरित निरंतर ॥ ५३ ॥ कहूँ वेदिका वनी मरन के मध्य सुहावन । कहूँ आनिकें लता छई अपरिमन ना
वन । फूलि रहे पचरंग कमल जल मधुप गुंजारें । आलवाल मणि रचित गुल्म आदिक के मारें । इहि विधि केन ववि
पिन गन खग मृग आश्रित लसंत । रूप सरस सखि जहँ तहँ वर्ण रह छवि मंत ॥ ५४ ॥ कोकिल कोपल शुक मयूर सारि
का हंस गान । सारस कौंच चकोर चक्र वाकादि हरत मन । जुगल रमित जहाँ तहाँ क्रीडत वकृ जांती । अदहि मिष्ट
फल नंदहि मकुलम नुराग सुहांती । कुंज को पुगान मधुप के गुंथ । पुष्प फूलनि का न । रूप सरस आलि गंध पी करत चकु
टि पुगावन ॥ ५५ ॥ विविधि रीति मग पुत्य लसे वकृ जांति रके । मणिन सहित मग विपुल लख कुल क्रीडत सुजांतिके । स्वर्ण
शृंग तें रचित सजित गल अनूपम सुंदर । पायन में नेवरा जु णं कत कूद तर व कर । सद्वित करने सब दिशा चलत फल
गेमे तें । रूप सरस सखि पांज वेदो रावहि कि करिखेल ॥ ५६ ॥ रत्न जटित वापीन मध्य वकृ धाम अनूप ॥ गान वाघत हर
षत नारि गान आलि रस रूप ॥ केकी जहँ तहँ नचत लखो घन गर्ज निमान । आलि मोर नाते लहहि तरु नत रसुन कुमयानी
मुनि तडाग नवरोह तिमिर मणि निर्मित वकृ जांति । रूप सरस सखि सोहही कलस उरोज पांति ॥ ५७ ॥ तिनमें क्रीडत
राम रमनि जिनके गुन गाने । नाघ घोष तें पूरित सब वपुह वकृ दिशा नते । लहार मत रघुनाथ साथ वनिता गन आप्त क
काम कोटि लावण्य मथित । मि कहाँ मुरीकानि । रूप सरस सखि यों तहाँ रहें पयपान हि वानि ॥ ५८ ॥ गेह वने वकृ जांति

सर्व्वायासरस प्रेमप्रकाश क ॥ ९ ॥ प्रसीति ब्रि प्राव

सखि

सि॰ वं॰ ६ विचि॰ ते मनु जव पुति तह रव

रवि चि॰ प्रभु ते प्रति रवि पुति प्रपय हरी ति

मना॥ अप्रस गनाते

कहे कोउ कैसें गाऊं । सिल्पसास्त्र के मांहि कहे बहु विधि सम काई । कूप वापिका सर न पुत्र जो होय वाटिका क्रिया
वस्तु आगार खनें जा महि सुघाटिका । तांहि कहत प्रासाद कहि अब सुनि या करनें द । रूपमरसमसखि चतुर विन ससु
ऊनपावे वेद । ५९ । अप्रसत्रोणी मिलि तीजु का चतुर्दिशा तो । ताहि कहें प्राशाद पंक्ति सवहि ये कवी जो । । लक्षके
टिकास पंक्ति हैं यक कल शृंखला मंडित । ताम तनि हि प्रासाद मंडलजे पाके पंडित । ऐसे मंडलको जहां हू [illegible] परार्द्ध सुभ
खमपं ना हि कहे प्रासाद खंड रूपमरसबुध [illegible] । ६० । ऐसे को दिशि खंड वीथि मंडल के माहि । पंच कुल को स्थान चार च
कु वस्थ यह आंही । प्राकार मिलित आगार चार जिहि च्यार सुहावै । तिहिं संज्ञा प्राशाद मंडप असक विज्ञ न गावे । ऐ यह
जो प्राकार तिहिं अर्द्ध मंडलक हि ये जु । रूपमरस अवतासु की ओर कु विधि सुनि ये जु । ६१ । चतुर्दिशा हैं चतुर्के गोपुरम
को एपुत । मंडप सहित अनूपम नायह नाम मकजनुत । ऐसे तो प्राकार चार चकु प्रति चार त्रिभि । ६२ । जो ढी रीति
[illegible] चतुर्दिशि अंगण तिमि । चतुष्कोण वास यह हाटप कोष्ठ प्रष्ठ्यह जानि । पद्म यह तिहि विधि लखि च प्रशालक
मानि । ६३ । ताके आगे चंदनी पुनि तिहित रअंगान हरियाई च कुआर प्रष्ठ यह अग्र वाटिकन । ऊपरि के पुनि वा
सयहाद्व [illegible] कोष्ठ त्रिकोष्ठक इनने रूक कहोत र क कु सम प्रकोष्ठक । स्वस्तिका व्यामं दिरपहे वरनें तजे मतिमान
रूपमरसमसखि ओर सुनि ये वन विधान । ६४ । ऐसे होवे [illegible] दिशान प्रति वसु चार क के अष्ट कुं त आगार सष्ट

लवे
सुघर । सुवि
अप्रस । पुनि
॥जिहि
लखि
ये कुमरु
गुनि

पुनि॥

कु

कहुवादि   मड्ढ॥

मि.चं. ७

जोवेदनिसब्दके। नामसर्वेतोभजतासुकोजानइत्रसवही। वकृरिकहैं हिजेदस्युनहु संज्ञाद्रुमरह। पुनिताकेप्राक
रकेएकहिछारववानि॥ विकुंदकयहनामतिहिविमुकमोरचितमनि॥ ६४ नीनलोगंप्राकारतासुएवंतरपछिमक
मतेहैं त्रयचारगोहतंचावर्त्तजेईमि। वर्त्तुलसप्तप्रकारयुक्तजोहोयताजेग्रह। सप्तकक्ष्यवक्रदिशानागकुंडलीनाम
यह। रूपसरससियरामकेनवनसप्तभ्रावर्त्तनामेआनमितसखिनकेअनमितगृहमनहर्त्तो। ६५। ऐसैहीपुनिम
ध्यस्तागामेसियाभवनहैं। सबहिनकीसिरमोरलालनदुःखदवनहे। रत्नचितनिर्मितवनेनानाविकुंवर्णरवेकि
तेरू। तुचितवर्तेकितेनद्रूपसवर्णके॥ निपुणाप्रदर्शकहैं कितेदिवसप्रदर्शककोत॥ रूपसरससियरामकेमहलअनूप
मंजोत॥ ६६। अवक्रमतेमुनिसियारामसंदिररसखानी। पुनितिनकोजोसावीमुख्यवसुपमेमयानी। चारुशीलाको
आदितेपसंज्ञासबजानी। सकलराजकन्यानरूपरिसीनापियठानी॥ दोयनेदरघुराजकेपत्नीगणमेमानि॥ रूप
सरसहैं ता मुक्तआनुनित्यसदासोजानि॥ ६७ तेसबहीपरवानसाठिअहचारिकलामें। वोदंहविद्यामांकनिपुणाइ
मिगुणसगलामें। जनकनंदनीकृपाल्जाविलइहिविधिगुणमागरिहै। असंख्यसरूपनरीमेवनरतनागरि॥ मु
रव्य२केनामकेंकहे जमुनियेरीति॥ रूपसरससदननसहितत्रिनन२पुत्तप्रीति॥ ६८ सकलसखिनमेमुख्यसिये
पियचोपकिशमखी। जिनपेरूवतीमइनूपेपोडसनारवी। पोडसरूपेआठप्राणसमराजकुमारीइहिविधिजानकु

इमि   जह   इमि   यह
गति लखि   तिमि कह   इत कहि   तह

तो॥सो   तौ॥

लली लाल सखि या मन हारी । वसु षोडस वर्त्ती सख्यो चौषठि तिन कसु वदानि । रूप सरस सखि सब वन के या हीं लीरदेस
नि ॥ ६९ ॥ वसु षोडस वर्ती सकही चौसठि जिमि सियपके । वसु षोडस वर्ती सत ष्याता नकू सब हिय के । सियकायहस
व वहुनता हि तें सियसम जान । गुण वय पै वे न व रूप साऊ कलु न भेद न मान । परै सियपकों निति सि वही मन क्रम वच
उर का यें । रूप सरस इन पै सदा सियरत्ति अति हैं सहितप्रति ॥ ७० ॥ वारु शीलता ले आदि दिपिपहि अति प्राणपियारी ।
सियास्वन के चतुर्दिशा इन के यह न्नारी । तीन को टनक सीता राघव रहस्य सदन है । चौथे वसु इन के जु कहे पट
किर दर दन हैं । पंचम षष्ट सप्तम सखी षोडस सख्य रु वर्ती सखं चौषठि संख्या जानि ये रूप सरस पुत्थी स ॥ ७१ ॥ वामदे प्राते
गन अवे मंदिर सब केरे । प्रथम कक्ष में कहे सखी चौसठि जिन केरे । तिनके नाम सुकहो सुनो पूरब कोरेत । दछिन
दिशा की कूंण न नक है यह न्यारे ते । इक सुभा लिनी दूसरी मंद कोप कें जानि । त्रितिय सुकंठा चतुर्थी सुक लित्र
रूमालि ॥ ७२ ॥ वक्रु रिसु जंघा पंचमी जु सब विधि सुवदानी । षष्ट वसंतो वद नाना म्ना कही वखानी । वामंती है सप्त
मी सु अठवी वर नासिका । कोणतलक यह पे दिव पूर्व सिय पियत्र पासि कों । या को नैं नैद शिवन के दर वज्ञ्रातक
हे रि । तडिता म्पान व भ्रूम कल जिज्ञादसं [illegible] केरि ॥ ७३ ॥ कामकेलि विसारदा जु भ्रार ही वखानी । सुश्रीवाका दस
ई रूप सं दो हा मानी । अपदश वीपुनि चतुर्दशी जु लज्जा म्पा कहि ये । सुधाधरा सरद श्री सुसीला षोडस गहि

मीकहो

सि॰ चं॰
६

पे। दछिनदरवाजानतलकऐसैजानकुआठ। अथपह्रातैंनैरत्यकोकोणतलकसुनिठाट। ७४ इतिदछिनदरवज
तैपूर्वराहकी। अथपह्रांतैपछिमराहकी। वंपकिमन्त्रहसुनिअठारनानेप्रवररूपा। विनोदिकाननईसवीस
रागाजुअनूपा। कामकेलिअकईसम्पुरादूयविंशतिजानूंरंजनिइकईसरागवर्द्धनीकोचिसमानॅ। नैऋति
कोणप्रयंतइमिअवप्हांतैंमुनिअथपश्चिमदरवाजानतलकवर्ननकरौंसमय। ७५ नैऋतिकोण। मानननीजु
पचीससाधवीवड्रविंसागानि। सुकामनईसतथाविसुकाअठाईसमनि। मधुरस्वरानंनतीसकोविदातीसवरव
नी। रूपसरससियरामरसिकुपेसवरसदानी। कुंदनामइकतीसबपतीससुकेसांदेविं। पछिमदरवजातल
कयाविधिसखियालेखि। ७६ पछिमदिसा। अवपछिमकेद्वारतैंजुवायवीप्रयंता। ह्वइनकेजुतमेसतु
[illegible] नाम [illegible] ननंता। तितीसदीवरंगाजुचौतीसवहेअता। मांतीपैतिसवीरसरोजाछत्तीछत्तिसमा। तंपू
र्दिछितीसैतीसबीसुरवसाअठतिससमानि। ननतालीसमुबोधनी [illegible] नलितनादीसातौ। ७७ वायव। अव
वायवतैंउत्तरकेदरवाजानताई। कलाविदा ४१ उत्तमदी ४२ वक्रारिवुमजाना ४३ गाई। प्रेमा ४४ प्रेमविवर्द्धनी
४५ जुसुरूपा। ४६ अमजानत। कामसंदीपा ४७ कहीविनोलादीधपहिचानं। पहातलकयहआठहे। अवसु
नियेजोअथउत्तरतैंईसानलौंवर्ननकरौंसमय। ७८ उत्तर। ध्रुनिविलंबिका ४९ अरुमरालगमना। ५० गानिस्त

जस तिमि
जनि। प्रह्र
गति
पे इमि
प्रह्र जे त
सत नि

५१ ललिता ५२ सुललिता प्रज्ञा ५३ विद्युन्माला ५४ तजिंदजा । कमलालया ५५ सुनंदा ५६ यहै वसु कोणन तलक हैं । अ
ब पहातें सुनि पूर्व द्वार परयंत कूलक है । गानकोविदा ५७ सुवासा ५८ वामनेत्रा ५९ जानि । वामांगी ६० दाक्षिनिप्र
ना ६१ तर्कपुलीन ६२ पुनि मानि । ६३ तथा सुलेखा ६४ कपोतांगी ६५ चो सठि ऐसें प्रथम कक्षा में चतुर्दिश आक्रम
मतें वहजे में । एर वश्रासा पथा कही षोडश मन त्राई । वी चिंजानि येचार दिति तर्फ न वसु जाई । याही विधि ते वेद दिक च
तुष्पष्टि है कुंजनि । तिनमें नागरि मुख्य पह संगम सखिन के पुंज । ६४ इति प्रथमावर्ण चतुष्पष्टि कुंजा वर्णा । अथ द्विती
य कक्षा । द्वितीय कक्षा में कही कुंजवती सब बानी । एर वे तें अब अग्नि कोण तक चारि प्रमानी । खंजनाक्षी १ कलाका
२ पुनि तथा स्वधर्मा ३ गुण वर्द्धनि पह वेद मिनाइहि दिक सुनकर्मा । आनलकोन तें दक्षनी दरवाजा तक जानि ।
विमला ५ कमला ६ रामा ७ ओ चंडवती ८ पहिचानि । ८ दक्षिण दक्षिन तें नैऋत्य कोन तक ऐसें लहिये । अनूप
चंद्रनासा १० र जया ११ नामवती १२ कहिये । पश्चिम द्वार प्रयंत पह तें नान्य विधिइ पि कुरंगाक्षी १३ सुभ्रष्टाक्षी १४
पद्माक्षी १५ तिमि । पयलोचना १६ तर्कइहि आगें पश्चिम द्वार तहां तें वायव कोणलों चारि कुंजमन हारि । ८ सुत्र
मासा १७ सोजना १८ मुनांगा १९ मधुरस्वरा २० गनि । अब वायव तें उत्तर द्वार तक वेद मिनाजनि । इ सहास्पा २१
सुस्मिता २२ सुघोसा २३ सुरवरा वरा २४ द्वारें तें ईशान तलक इमि जानक । अपरा प्रसन्ना स्पा २५ प्रवीना २६ सुप्रह

सि॰ चं॰
९

जलप्लुनि

रही॥

सितास्या २७ ओरॅं। सुमध्यमा २८ इहि भांतियह चारि जानि इ हि ठोरॅं। ८७ इति ईशानकोण। चारि कुंज ईशानकोणतें दा
रप्रयंता। चपल २९ विनोदी ३० सुप्रसादी ३१ विजया ३२ नंदनंता। इहि विधि गानि वनीस कुंज आवर्ण दूसरें। निजस
हचरि युतसखीन हाबपतीसूं विहरैं। पगुनि श्री मरकत धाम हि इमि षोडस सखियां जानि। निजसहचरि युत कुंज में विहरत
सोनरस्ता नि। ८८। अथ त्रितियावर्ण। अथ सपूर्व तें अग्निकोण दिपि हेम खिवकुंजें। संतोषा १ जूनंदनी जु २ मुखिसह
चरि पुंजें। कुकस्मित लतेदहिन के दरवज्जा तांई। चारि गिजू ३ रतपाम्बा तु रूपा जू ४ गाई। कारतें नैऋति नलक विसदा
दीजू ५ अरु विनोदनी जू ६ कही इनकै सुचि ६ धाम। नगनि ८९ नैऋति कोण। नैऋतितें गनि सुमीला जु ७ पुनि स्वातिसी
ला जू ८ वरुरि पश्चिम धारत हा तें सुनि आगीला जू ९ सुरसा जु १० अरुन दूजू ११ वायव तनक गाई। वातें उत्तरफाटक
तक छप कही सुहाई मालि नीजु १२ कंचनांगिजू १३ महत कें विविच मूहैं। ९० चित्रवतीजू १४ पुनि पश्चा ईशानकोंनत
क दूहैं। ९१ ईशानकोण। ईशानकोनतें पूरव के फाटकतक ऐसें। अंजनाद्री जू १५ परपुस्यंगा धा जू १६ ऐसें। इहि विधि
धोड समसखी कतत्तिसरे वखानी। सियपिय की अनुचरी वृंद पे पुन्य पजानी। सेवत जुगलन सब रूप पहे जुगल रसिक
मति मेंह। जुगल प्रान प्यारी गिन मोदित जुगलन सनेह। ९२ इति त्रितियकक्षा। अथ चतुर्थावर्ण। अब बसु नियेजे अक्ष
दल्तु पर्व रहे सखी सु वि। सियाराम की वाम जि तानि वर्तहिं इनरु चि। श्री मार्थ ब्रज मनि धिमान न्यानन की जाई। श्री

पे
प्रति
प्रथमगात
गति
सो
प्रति है

गति

९

रघुवरसेपानियहनविधिवतहोइआई सकलसखिनसिरमोरयहदंपतिज्ञीविनिमूरि। रूपमरसइहिआवरणराज
तवेनवनूरि। ८८। प्रथमपूर्वकेद्वारतेजुगनियेसुखरूपा। अग्निकोणपरयंतनवनजिमिवनेंअनूपा। स्वस्तिकारव्यतहल
सतचारूप्रीतामुनमंदिर। कमश्उततता विप्रालललितजनसवर्णगिरि। रत्नदिनिर्मितअमितविधितोरणल
लितसुहाय। रूपसरसविचित्रहस्यग्रहकापैंवरनेंजाय। ८९। वर्णोमविचित्रवितानजहंतहंकलसकाहीं। गिलमगलीचा
बिछेविविधिविधिकहेनजाहीं। तिनकेचकदिपाविपुलरत्नमयथंभसुहाये। अतिमर्कतपाकरस्वच्छनिभ्रातसोहाव
नपाये। बनेकरोखाजहंतहें। रत्नजालदीपते। रूपसरसमननपनकोखिचतछाममनखंत। ९०। कंचनकेगोपुरअनूपद्वी
पतचकुआसा। ध्वजापताकामनकुविजयकेपत्रजुदासा। कलसालसतदिनेशचंडवतअतिसोजालहि। मध्यस
ताकोमदनतुहिकौसकैकोनकाहिं। तनिचितानजरतारकेमुक्ताफालरिल। गिंद्रहदयंनवकरत्नकेरूपसरस
ललिप गि। ९१। विछीविछायतिअतिअमोलअनतोलकामवति। तैमसतोरणरचेविविधिमुक्तामयपुंयानि। र
त्नजालकरिकेंप्रकासइहिविधिअनकपनें। केउरूपणकेधामअमनसोवनकेकितनें। तिन्हरहइहिनंगतितेंअ
नमितनक्षविशालं रूपसरससबकोकहेवोकवाटिकाताल। ९२। अबसुनिपेडनकीजुआठजेसचिवबखानें
गुणपंक्तीअहगुलालपार। रुपराजीउठानें। रूपंथीलवपुनिसोरतोगीपवरानलकादगानि। रंगिका७गुरसि

लखि पे पुनि स

सि·चं·
९

कार सुखदाई याही विधितैं जानि । इनके नवन जानू पत्र हैं वनें चतुर्दिश जांनि । रूपसरसौं खिपां विपुलताके मधिप
हिचांनि । ४३ इक रके पुनि अथ रछय स्यह जानू ।। चतु अष्टि पर यंत यहे क्रम तै पहिचान । जिमि वसुके चक्र दि
शरही षोडस की श्रेणी । ता आगे बत्तीस तिन मैं सखि वृद्धगराणी । बहुरो चोष्टि इमि जानि ये नवन विविधि सुदर
सो रूपसरस सखियां तहां रहैं कार्यरचनीस । ४४ । वसु षोडस बत्तीस चतुष्षष्ट्या वधि सिय के । तैसेही श्री चारुशील
अनुजा गन तिय के । तैसवता के चतुर्दिश राजत वक्षधामन । अपनी सहचरि संग लियें दंपति रुचि कामन । छाद
श संवत वपसनव नवदुति तडित लजाय । गंध अंग मनु केतकी कोर वकुकुसमसुहाय । ४५ । रूपलता अरु रू
पसरस पुनि कनकलता गनि । हेमलता अरु प्रेमलता है मांगी कों जनि । सुजसी आदि के विपुल जानि को मके
गनाई । रहैं तहां ई हिंगौति कछु कसंज्ञा समुझाई । पूर्व दरतें लेय के अग्निकोण परयंत । चारुशीलके नवनसु
चिरूपसरस विलसंत । ४६ इति श्री चारुशीलाजी को लक्षितिकारम नवन पूर्वद्वदर्व जोसें अग्निकोणतर्फ । अथल
क्ष्मणाजूको नंद्यावर्त नवन । अग्निकोणते दक्षिणके फाटक तक अष्टैसें । श्री लक्ष्मणा [illegible] नवन नंद्यावर्त तैसें
तीन लगे आवर्णल सग्रह अति विशाल सो । इनके मधि वन केजु जानि निमिगेह जालसो । नाम कहों वसु मुख्यकें
विंदा रंगुणावली रजु । प्रांचिका उरुमीदिनि ध सुगंध प [illegible] सुदमाली जु ह । ४७ । अरविंदा ७ अरु सावरी रजु

हृदा लखि क्रि ते॥ जति
बरुद सन सखि तेःसन नमो गरव

पुनि तपा

णारूपमनोहर। इनआदिकके नववनतहां जानकूतिमिसु द्र। अवदक्षिणके द्वारतेजुनैरितिकोंणतक। सुत्रा
गान्नवनअनूपनामताको विछ्छंदक। नामकहंदसुमुखकेला वणपा ख्वेणला२ जु। कांतिश्यंतिः ४ प्राणी पम्र
मा ६। जानकूसुधा७गुणा८ जु। २८। इनहिआदिलेचतुष्पष्ठिमहवरिणनइनकी। चतुर्दिशायहपंक्तिजानियेते
सेतिनकी। अवनेकूतितेपश्चिमद्वारतकश्रीहिमाजू। स्वस्तिकाख्यमंदिरअनूपसखियनजुतराजै। सुखनामयह
जानिवसु। अचिताली १ प ख। कांदनी अ ३ चंद्रला ३ नवली ४ स्वणाप सुहा व। ऐहीईै। वकूरिजानिमोदायता इजु
खंवका ७ सुधाया ८ इनहिआदिलेचतुष्पष्टिपरयंतसमाया। २ हततहांइमिलेखिदेखियेअवकहुआगे पश्चि
मद्वारतेंवायवतकश्रीक्षेमापारो। नामकुंडलीनामतिहिवनवन्योमनहर्ने। इनकीजोवसुमुःख्यतिनसंज्ञा
सुनिसुनकर्ने। ६१। स्यामा १ मोन्ना २ सुन्ना ३ जयाध विद्या ५ अनूनेमी ६ चिरा ७ चंद्रिका ८ जानिअष्टयेअतिचितप्रेमी
इनहिआदिलेचतुष्पष्टितकचद्रदिपुराजैं। वायवतेश्रीवरारोहउत्तरलोंभ्राजैं। गोहसर्वतोनद्रहेमरत्नसखिनके
नाम। प्रेमा १ प्राज्ञी २ श्रीमती ३ मध्या ४ सेवा ५ वामा। ६२। रेवा ६ प्राची ७ प्रज्ञा ८ जानियेअष्टगुणालय। इनहिआ
दिलेचतुष्पष्टिपरयंततहांदय। अवउत्तरकेद्वारतेजुईशानकोणतक। पयगंधकोधामनामनंद्याव्रत। त
जिसक। संज्ञासुनिवसुःख्यकीराजीवा १ इमिजानि। नीला २ ली ३ अरुकांचिका ४ राजहंसिका ५ मांनि। ६३। रागमा

तहँ हेतानरू

सि०चं० ११ हित ये ॥४॥ विधि कलाते

ल ५ वीनावतीजु ६ कोकिला ७ वखानी । चंद्रज्योति सा ८ कही आठ पहमुः ख्यसुहानी । चतुष्षष्टिपरयंत ता नियेतैसे
गेह । वकुरिकौं गणेई प्रान तेज पूरवतन कये हा ॥ नं द्यावर्तसुधामविधि श्री सुलोचनाश्रीजं ॥ तिनकी मुख्यसखीनके
नामक हौं सुखलोन ॥ ८३ । प्रज्ञा १ मेधा २ माधवी ३ जु सौंतिका ४ वखानी । संपिवासिनी ५ सुशायिका ६ जुसुघोषा
७ जानी । तथा सुनाला ८ अष्ट ये है कहि मुख्य सखन में । चतुष्षष्टिपरयंत और जानकू सखियन में ॥ तबनबनें तिनके
नहा असी विधिपहिचानि ॥ वसुदिश्रये वसुकी रहनि वर्नन करी सुजानि ॥ ८४ श्रीचारुशीलकौं आदि लै ये पहमुख्य व
खानी । क्षमतेजा नकू लक्ष्मणा २ जुसुनगा ३ मनमानी । श्रीहेमा ४ श्रीदेमा ५ वरारोहा ६ जु कहिये । पद्मगंधा ७ पुनि
श्रीसुलोचना ८ वसु ये लहिये ॥ इहि चतुर्थे आवर्णमें अष्टन वनइन केसु । रूपसरसक छु बनें न सबनसकें कहि
सेसु ॥ ८५ । वसुषोडसबत्तीसचतुष्षष्टआवधिससखियां । सबके वर्नन की न्ह अपर अनमितता तिन सखियां । चारुहा
शीलनै आदि अष्ट के अष्टभवन है । तिनके चारहजार नगाये है नुगावनहे ॥ नृपति प्रति २ चारके स्वर्णदंड लैहा
थ ॥ गनसंख्यानै राज ही सखी सुनकू पहगाथ ॥ ८६ । अथ संख्या प्रथमक हो गणदोयको जुइ कमु खिपनेंकेस ह
कौं से अष्ट मिला पसुत्यतिहि नाम सुकविक ह । आठसुत्य संयोग नाम तातें चपगायो । अष्ट चपन को है
तपेक सु चपमनजायो ॥ नसुन चपको दि चयन. नियथा अष्ट कौं निचय ॥ अष्ट को निवहति सिरूपसर सम

पुनि कहि निचय

तू हिवि ते तह जत ॥

ल्यासुदय ॥९७॥ अष्टनिवहकोयेक यूहकहियेसुखकारी अष्टयूहकोयेकहोतसंदोह तथारी अष्टमिलैंसंदोह विसरइक
कहियेताको अष्टविसरकोहोतयेकगजसंज्ञाजाको इहिविधानतेजानियेजतहसखीअनंत उभयचमरलीन्हेंकितीछरी
बेंत घेरहाकर ॥९८॥ इतउतकूंकेउचलतचमनन्नपनखरमीटे वाजिरहेचकूदिशागसुन्पकेउधामनजीठा श्रीरघुवरकीप्रा
णप्रियागनिचारुशीलसुखि रहतचतुर्थावर्णमाळ्याविधिआठसुखि लाललनकचकूकआवहीसोसुखकहोनजाय क
वकूकसिपकेसंगतहूपसरसस्र इमोज ॥९९॥ इतिश्रीराजकिशोरीकीवहिनश्रीराजकिशोरकीप्राणप्रियाश्रीचारुशीला
सर्वेश्वरीजुकूंआदिलेपसवकेनवनअष्टसखीवर्णनचतुर्थावर्ण अथपंचमावर्णश्रीराजकिशोरीजूकेनवन अवस
नियेआवर्णपाञ्चमंरीतिसुहाई षोडसदलकोकंजमनकूंअसीछविछाई चारिदलनकेचारिद्वारचकूदिशारखाये
द्वादशदलमें द्वादशऋतुतगेहवनाये षटरितुरूपी गेहहेरहेसदारितुछाय षटरितुकेअनुकूलयतहांसमपरो
चकजा ॥१००॥ पूरबद्वारअनूपवन्योइकदलकोसुंदर रत्नजटितचकूमांतिध्वजातोरणकलसाधर दूसरदलतिहिअ
ग्योहसोरितुवसंतको उईरहतरितुसदासह्मसोरंगपीतको चारुशीलसर्वेश्वरीजूकीअज्ञामानि तहांलक्षसखिनि
वहसंगचंद्रकलासुखिरहति ॥१०१॥ इतिवसंतग्रहचारुशीलाज्ञाचंद्रकलाअधिपनी अथग्रीष्मग्रह अवतीसरदलगेह
जानिसोरितुनिदाघमय धूम्रवर्णकोसमुझिमामचंद्रावृतितहठय येकलक्षसखिनिवहसंगलीन्हें यहराजै
अग्निकोणमेंअग्निमनुयहवनिअसठाजे पुनिदलचतुर्थवतअअसोवर्षारूपप्रमानियत तहसखिनलक्षसंदो
हतेचंद्रमुखीछबिछानियत ॥१०२॥ चित्रवर्णयाकोजजथावदयकईरंगके छतरिनछतरीनपरितंरंजनुघटाग

सी॰रा॰
१२

संगकैं भ्रमभ्राविरही होतयथारचनावकजाम् । दरवज्याई है अथदक्षिनपंचमदलमानं पुनिषष्टमदलयाकेउपु
रसरदरूपयदेखियत ई हिवर्णसुचंद्रपत्तापरमेलदसंदोहनत ॥१३॥ इतिदक्षिणद्वारतेपश्चिमकुंकिसरदरितुयह
अथनेरितिकोणमेहेमंतरूपयह स्यामवर्णहेमंतऋतुयहलखिअतिसुंदर । अष्टमस्थैसखीहिमकराननात
होवर । लदविसरसहचरीअपरताकेसंगजानं । येरितकोंनेमध्यवर्ती दसममदलपानं । पुनिसिसिरगेहपाट
लवरन । चंद्रकरासंखिमख्यतह । जिहिलदविसरमितसहचरीरूपसरसअष्टमदलह ॥१४॥ इतिषटरितुरूपयह श्री
चिमेपश्चिमद्वारनवमदल । अथषटरितुअनुकूलयह । तहांप्रथमवसंतानुकूलसदन । पश्चिमतेकुंकिवायवकोंजोगे
हवनायो । सोवसंतअनुकूलरतनजटितमसुहायो । जिमिवसंतमें वकुनतानतिकेपुस्पविकासे । तेमिईयाकीरचनिमणि
नतेअधिकप्रकासे । तहिचारुशीलआपुसतहांस्यामामुखिनिजअक्षयुत । अरुयेकलदसहचरिनिवहसाथ दसम
दलमेवसत ॥१५॥ इतिवसंतानुकूलगेह । अथग्रीष्मानुकूलसयनवायवकोंणमेंयेकादसम दलवनदिसि दघ अनुकू
लगेह वायवमेरूडोचंद्रकांतमणितेविरचित मतुअभनअकडो । चारुशीलरूवपायतहांरामासखिमुखिया ल
के ह्वनिवहईकसंगलेयसोवसतीसुखिया । पुनिवर्षाअनुकूलयहरंगकमलदिसदलजह । विमलासुखिनिज
सखिनयुत वायवतेंकछुअयचल । इति वर्षानुकूलयहपाके अथउत्तरद्वारत्रयोदसमदल । अथयाकेअग्रईसा
नतेअबैसरदानुकूलभवन । चतुर्दसदलवत । सदैरितुअनुकूलगेहपाटलवरणोंलखि । निजसहचरिगणसं

गतहां बसती कमलामुखि। पंचदसदलजो जानि अग्रइ ईसान कोण जित है गांगा सखि मुः। बसत जहं निज गण
सेवित लखि सोहि मिरितु अनुकूल यह हस्त वर्णं पवन पद सरस। पुनि षोडस वृंदल अग्रई हि सि सिरां अनुकूल रंगक पिल
तस १७ दोहा। विसदा द्राक्षा सखि मुख जहं निज सहचरि गन युक्त रूप सरस असजानिये तति पक व्हगतिअंक ११८
छपै। असी विधि तें जानि कंज षोडस दल वतपह। चारिद लनवत चारि षार चक्र दिसा समुझिमह। द्वादशदल
वतघादसयह वरने सुखरू पा षटरितु के षटतद अनुकूल के के हे अनूपा मिल्लर तें रंगद दिग्र अधिकारी नीजनाय
चारुशील अग्र आजथा रहै जहां जहांलाय ११९ चारुशील को नाम यही तें हे सर्वेश्वरि। इनकी अग्र सदेव
तें ईम हलन अंतरि। सी तार घुवर इनहि सवन के उपर राखी। ताते सव के सीस नापुस इनकी साखी
निहि र अापुस जहां जहां तहां रहे सो जानि। रूप सरस अाव एंग ति पंचम कही वखानि। १२०। इति षट
रितु के अाषटरितु अनुकूल के श्री राजललीकि नवन वर्णन पंचमावर्ण। अथ षष्टमावर्ण। छ। अवपे
दलजो कहे तिन को बीजको समुनि। अति आयत सद्वी सि मान रंग पद्म। रागग्यति। सेवा विधि के गे
हतहां लखित छवि माला। सकल रि तसुखदा निजानि सदनन की माला। वसु से ख्या सो जानिये प्र
थम हि मंगल कुंज। पूर्व पारतें अग्नि दिशि रूप सरस रस पुंज। १२१। ताम्रे क्यन प सुतार हहिं वेन वपु

जस गति

लखि

इमि का कु

अरु

गति सो

मि

नति

प्रति　　२ हत तिति

तजानंमंगलपा ।१। अहमहोत्सवी रचहनामप्रमानं ।१। अनुगामितितिनकेजु वकुंतगाईसुनवदनी । तिनकेअ
हतहांवनैविशालसुखसुखदनी ॥ सियारामकेनेहकरिसेवनतत्परसो ॥ रूपसरससखिजेतिइहिकुंजरीतिहिपा
गै मं ॥२२॥ अग्निकोंणअरुदखिणकेदरवाजानाशेरदक्षावनकीकुंजवनीजिमिएवेसुनाईसांति ।२। श्रीलरुइप
जानितहांतेसोइविधिकरिकें । अवदक्षिणकेघारतेअनैरततकनरिकें ॥ मानिमंजनागारसोअतिविशाल
छविमान ॥ रूपसरससखिकुंडवकुमणिनरचितहितन्हानो ॥२३॥ घाटनूकपरिगिहवनैसोलागतनीके । केतवा
हरलवनकितेअंतरजलहीके । कलसध्वजातैलगतसुहायेचोकवागमे । मोदा । अनुमोदा २ जुदोयपक्षिप
तीजागमें ॥ न्हानकार्यपरवीनसोसियारामहितदोउ ॥ रूपसरसनिजअनुचरिनसहितविराजैरीति ॥२४॥ नेकृति
तेंअवपश्चिमघारतकुंजकलेवा । रोचना । जरुचिरा २ तहांदयसखीरखेवा । तिनकीसहचरिअमितजहा
जानकसुखकारी ॥ पश्चिमघारसेवापवदिशिपिनकलखोअगारी ॥ सोशृंगारागारहै । उमत्तनिकुंजेमालजेरू
पसरसत्तहमानपैरंजागोरी २ वाल ॥२५॥ तेनषणगतिमेप्रवीनसियरामहेतुतहां निजसखिगणतैंसा

हत　रुचि वति　प्रति　रुचि　प्रति ते　वति कहि

न ति ॥　॥ नव

हितवसैं अैसी विपिनछवि पहे । अब वाय वतैं नगर के दरवज्जा तांही । सजाग्या सो वनूं मध्य मंडप कमलकांही
नाना कौतुक तें नरको विसमय कारक जानि । रूप मर समसविदोयतहे अधिष्टात्री मांनि ॥२६॥ तहां प्रजा लाल
नावलीजु२ निजसविगणसंयुत । अब नगर के दारतें जु ईष्ट्यान तलक गत्ता हे तो जन आगार जानि सोवा
रिजागा करि । येक पाचक के स्थान येक जंह पचे अग्नि धरि । येक जहां तो जन करहि । इक जह वीरी आदि । रूपस
रस इहि नांतितें चारि जाग विस्तार क ॥२७॥ तहां मुख्य हे जो निसुधाहस्ता जु१ पुष्पकला२ निजसावि यन जुतपा
क कार्य में अतिसय प्रवला । एख कार सयतं अव वेई द्यान कोंणते । मध्याह्न सयन श्रृंगार रचो विविधिक होजे ताण
तें क दक्क द्व प्रतिरमण अति वकु दारन पुत सोहे । रूपसर रसव रनै कहा लखत नैन मन मोहे ॥२८॥ तहां की अ
धिपति जानि सखी पुष्पा गुणसागरि । चित्रकांती१ चित्रलेख२ इमिमा निजु जागरि । बसु संख्या इहिं नांति
जानि सेवा अह सुंदर । एर पतें क्रमे तें जु गिन भृंग लादिक मंदर । कप थवि विइक दारसु वितोरण दिलगिसो
हे । रूपसरस आरूढि दिष्ट्या चारि जानि मन मोहे ॥२९॥ पेक र जो दार तासु केत्रय रफाटक पावि विधि चक्र य दिष्ट्यान
रितसमानि विरचित हाटक । घोर दकरोख अनूप जालतें सो हस्तनी के । पड-दासाईवान कामजर नार अफी के
ध्वजापताका नवलनलगि कलस दूरितें दीरव । रूपसर रसपेखत नयपनो वेचंत अन्नतक्रति ॥३०॥ इति श्री रा

पयाते प्रवर॥

॥जिहि लखिक प्रति

सी.चं. ९४

त किसोरी के मधुर्य ह्न्मयन तलक अष्ट कुंज वर्णन पद्मा वर्ण। अथ सम मा वर्ण। अवया केतो अय ये कप्रा
कार महा दुति कनक रचित। मणि सीपजा दि वकु विधि के मंपु तिता सुजा नि अति अवकार व सुत्र पफा टकलणि
रचित बकु दि अमरवी गणन। सियपिये नेहपणि॥ नाम सदे रितु जोग पय हता के मधि विसंत॥ रूपसरस आयत
अहत कलशा का सप्रपंत॥ ७० अष्टापद गति रचित लगत सो असहठ विखानी॥ मनकुं जारि करि नाना वेद
वतन गेसु हानी। तिनमें जो सिद्धांत रूप श्रुति सोइ जनु गेह। अपमंडल जो लगोई उर विवन्हि सुजे हा॥ सूत्र वः ख
स्त्रीन के बीज जो तिधरि रूप॥ रूपसरस सखि या हि विधि देखकु रीति अनूप॥ ७१ ब्रह्मामुख जो वेद जानि सो या
के अंसा। गूढ तत्व तिनको जु यहै तक रत प्रसंसा। दूरि हि ते ते स्तवन करत सो मुनि ये सुंदर। सहस्त्रा दस हि क
हहि गवाक्ष न तेल खि मन हर॥ सहस्त्र पात्र थं नाने ते जालन ते श्रुति मान। रूपसरस सखि मुख मकल दि खि हा
रन ते जानि॥ ७२ पुनि अटान परि अटा मणि न ते चित्र बनाई। सहस सी स अरु सहस मुट दत सो छवि छाई। अर
स्परस आ ज्ञत्य गेह चित्रित गवाक्ष जहे॥ सो मनु देव विमान करै स्तुति चतुर्दिश तहे॥ मणि पर्यंक विराजही सिया
राम रस खानि॥ रूपसरस इहि पुरुष हिय ध्यान मूर्ति सोमानि॥ ७४ श्री सोजा निप्र ज्ञा वनामु खनं ना वकुं नांती
लगी अटन परि वाटिका जु मन हर्न सुहानी। लघु कुसुम के ई जाति पुस्प फल किशलय सहिता। सकल रितुन

रवि है॥ रूह जनु

लो मनु मनु जिहि कं मणि

ति ति रूह पिति॥

॥लखि   जला तिहि

मेरहहिं वेहि मरयू जल चहि ता॥ सरतहि विपुल सरोज प्रुत कूप वापिका सोहि॥ घाट मणिन वधिगोहट रिरूपमरस
मन मोहिं॥ २४५॥ सकल द्विपान मे सोहहं समार समयूर पिक॥ जुगल रस वजंानि करत मग्न जूषित कौतिक॥ कु
लसपताक अनूप जाल सो तिनके सुंदर॥ छत्त दार सोभा यमान अनमित विधि मंदर॥ तीन अंगा तिग्रह ज्ञान कूक
रध्य मध्य पताल॥ रूपसरस मणि क्रूत लखे न लखवा तनडकाल॥ २४६॥ क स्फ गेह अनूप वने अनंत छविकारी॥ वायु
मेघमंडल सुविदत्त परमसत अमसनारी॥ अधो मध्य पर्यंत वारि मणि रचित प्रकासित॥ खंड खंड मे वारि वायु आत
परूनासित॥ रितु अनुकूल सम्हारि येक नकी युक्ति अनंत॥ रूपसरस सिय नवन की रचना अकथ लसंत॥ २४७॥
जल के नलसव नवनमाऊरा खेवुक्ती करि॥ वायु सत्र ते वायु आतडच्छामा पिकनरि॥ सूर्यकांत आदर्शपो
गातें आत पतेसें॥ जहँ गम्य नहि तहँ नपहँ पङ्क्चतग तिश्रमें॥ दीखे काच प्रताव ते धसत हि सतवें कहा॥ रूपस
सजीत शिशिते सो सव गिन प्रतत्सं॥ २४८॥ करैं अवणमे वान दूरि जो को नमन नाई॥ ता के मुणावे हे तु भो अनालि
का न्नाई॥ इहि विधि जोनकू नवन स्मे अद्भुत न लगाति॥ वर्ण सत्र तें वनें रजतसत्र न ते चित्र ति रजतस त्रसे
नेवनें स्वर्ण सत्र चित्र तें॥ वस्त्रन के ई विधि दिपैं मणि गेह वनें केअ तिनकी आकृति॥ पटदा साई वानविलाप
ततेसै छाजति॥ तोरण वंदनमाल द्वारथंना अति सोहे॥ पुनि चित्रित तोण कपाट चहुँ दिश मन मोहें॥ को

॥पुनि

मणिर्यपणितनसिगरेहैं॥ २४९॥ चंडसर्प॥२

कला · तक ते · रवि हेति · अग्रह · अग्र · किते पुति · सव · हक॥ · लखि॥ · जस पुति · अग्रह

सखिनितस   लखि॥

प्रान्नी तिन्ह अवलीनके चित्र कियेबकु नांनि। रूपसरसमो कोंकहे विधिविसुकर्मेनजांनि। ४०। मुक्तागुंफितवंद
मणीलगिगुच्छालटके। करअवलंबनहेतुवसनविचित्रवनन्छूटके। दीपालपवकुनांनिरचितरत्ननकेसोहे
खगआकृतिमणिमयीमंदिरनप्रतिमनमोहे। वसनविन्यसनतैंमजीप्रतिमांरचीअनूप। रूपसरसघरद्वारनै
नीतीअनन्त प। ४१। मर्कतमणिकेगेहकितेवणिपीतमणीके। हरितअरुणकेजानिरचितकेतमककलघ
णीके। तथास्वर्णकेमानिफटिकमपलखोजुकेते। वज्रविनिर्मितविपुलसवेदिकुद्वाररहेते। केईनवनके
गावनहिंनिश्रेणीवकुकीन्ह। रूपसरसतेलघुमहतअमितनांनितेंनाहि। ४२। विद्रुमकीकेनवनीलनिमर्कत
कीकेती। कंचनकीतिमिघटितथागजरदकीतेती। चंदनकीपुनियथागंधसीचित्रसवजानं। वेष्टितकोम
लवस्त्रतैंजुऐसीविधिमांनं। कितीजानिहिंडोरकीकलकेमन्त्ररवाय। रूपसरसइनतेंतुरतनच्चयहचढिजा
य। ४३। सन्मुखद्वारअनूपसुषिमैंद्वारतथाहैं। दुकूपट्टनमेद्वारतोरणादिकरचिताहैं। नीतरद्वारजुगोप्यराखे
ऐसेनवननके। ऊर्ध्वचढनकोंकितेलखोतिमिअधोमटनके। आसनपीठअनंततहपेविमवपर्यंक। रूपस
रसयहयहप्रतीनिर्मितरत्नमयंक। ४४। मदनरंगमिकुलिरहीआंदोलमुहांवन। ऐसेजानकृविनोदअमि
तविधिकेतहांसोहे। वोपरिआदिकमितविधिकेतहांसोहैं। वोपरिआदिकअपरख्यालकलकेमनमोहे

तिया नव हरनदि त पारि

रसिक[illegible]जहि ... लरवि॥

यहनीतरुनीती नकेलखहि फन वतचौगिर्द । तरु आलय ऐसे बने मनु विमान सुखवर्द ॥ ४५ ॥ तिनके मांही नवल
सुगंधन संग्रे चित सोहैं । मणिनिर्मित गुल्मादि पुस्प बहु वर्ण बनो हैं । तैसें पक्षी विविध जंत मृग कस्तूरादिक जंतू
मार सहंस सुक तथा सकल मृग जाति प्रमानू ॥ वनितादिक मूरति विपुल को न कहै सब गाय ॥ रूपसरस इहि भांति
कछु रव लपट दई समुझाय ॥ ४६ ॥ मध्य जु बाग मैं जो निवेदिका ताके सुंदर । सभा मंडप हि युक्त जुक्ति इहि वनें सु
मंदर । नाम सर्व रितु जोग्य जवन वर मो मनहारी । तामें इहि विधि बनें भवन जहं तहं सुखकारी ॥ तिपगन की
उहि भांत वही गांव हि वाघ वजाय ॥ रूपसरस सिय सहित जहं रमत लाल हरषाय ॥ ४७ ॥ इति सप्तमावर्ण ॥ अथ
सुक्ष्मभावनार्थ सीतारघुवरजू दनकहै आसको भनिधारी । वेदन पावहि पार जानिये जो कथ महारीव
क्र रिरसिकन जुगल कृपा निज जिहि पर्सै धारें । आरतलवि निज सिस्य सुफ्रत बताहि उचारें ॥ सो अब कछुक वर्नेनक
हूं सूक्ष्म रीति दृढ है हों ॥ रूपसरस जिहि भांति तें जै हिये संकेत ॥ ४८ ॥ अथ वार्तिक । श्रीसीतारामजूके वनको पार वे
द हू न पावें ऐसो । परंतु श्रीजुगलसिरकार की कृपा से रसिकजन कछु दय में धरण करें । सो कहने में आवे नहीं
परंतु सैं ही जो निज शिष्य होय तासें प्रकाशत । तहां श्रीचंद्रकला मा भावनार रसोपदेशार्थ श्रीचंद्रअलीजू ति
नने कही कुंजवत्तीसा सो सिस्य समुझि मैं जरूर वैठे नहीं । तैसे इनमें अर्द्ध घोडस श्री रसिकअलीजूने कही । जैसे

चारि भाग मेत्र
३ भाग्य में चोपरि
मध्य वे दी पें स्ता

सि॰ चं॰
१६

यह कहि आये। सो तो। श्री पार्वती जी के प्रश्न पें श्री शिव जी ने वर्नन किया। परंतु यामें मध्य भाग के कुंजन को विस्त
र रह्यो। सो श्री रसिक अली जू ने शृंगार खोल्यो। तहां मंगल कुंज कूं आदि लेकरिके ८ दिशा में ८ कुंजन पें कयेक
दिशि में दोदो पें कदरवजा के दोनूं तरफ कोंठा। सो पहलें लिख दई जैसें मध्यान्ह की सयन तक। अब सेठ ठवें क
त में इन ने ८ रखी। अब जैसें बीच के। सप्तम कहा में अष्टदल रखी सो सुणो। कमला कांत अष्ट कुंजन कमल के आठ
दल आठ दिशा में। जिसमें पूरब के दल में तो। पुनोत्थापन कुंज १ अग्नि कोण के दल में। मुख प्रक्षालन कुंज २
दक्षिण दल में। कलेवा कुंज ३ नैरित के दल में शृंगार कुंज ४ पश्चिम दल में संध्या आरती कुंज ५ वायव के
दल में सभा कुंज ६ उत्तर दल में भोजन कुंज ७ ईसान कोण के दल में सयन कुंज ८। अब सेपें अष्ट कुंजन तो दोप
हर पाछें की सयन तक जानत रि। अर दिनोदय में दोपहर तक की दूसरे में। अब सें। सोडस कुंज का विहार। अब
अष्ट कुंजन कहने की श्रीमद गुरु आज्ञा सुन नई मोकों। तहां बाहर की ये जो अष्ट कुंज कही सो तो ब्रहद है कदाल
ति। सो जुगल के शृंगार सवारी करिके पधारते हैं। ताते कछु परिश्रम मालुम होय ताते भीतर रखी। तहां ती
न चारि ग्रंथन में सें सोधि के नाम कुंजन के रखे मंगल १ स्नान २ शृंगार ३ सभा ४ भोजन ५ विश्राम ६ राम ७ सयन ८
ये नाम ग्रंथन में सें अछी रह महत न तरिकें निकारे हैं। कोई ग्रंथ में कछु सवाई कछु घाटि अब सें रहती रही सो इन में

ग्रह कुंज
वहु तरसि
कुन ने कही
है सु अवरी
तिन सो कौ
बी

त

पश्चात्स्थितकेलिवेठतीहै। अग्निसेसयनपर्यंत। सोऐसैंरखीहै सोमेरीडीठताप्रापकरिकैसुननां। प्रथमम
ध्यमैं तोसत्ताकुंजरखीहै जिसकेअंतरकैं सयनकुंज। ३ अरतसकेदक्षिणकैं मंगलकुंज ४ सोयेतीन्यूंकुंजपूर
वकोंझांकतीरखी मुखहै। अरतोजनकुंजहै सोसयनकुंजकेपासउत्तरकूं रखीदक्षिणतर्फझांकती ४ अ
रयाकेमुखदक्षिणतर्फहै मंगलकुंजकेपास उत्तरनैझांकती विश्रामकुंजहै। अरनैझांकती ५ येदोन्यूं
कुंजमध्यानसयनकी अरवा जोजनकी अरस्परसझांकेहै। इनकेबेछाइसवातकेवास्तेरख्याहै कीतोजन
केअंतमैं सोपैडगमनचहिये ताते सयनसत्तासंगला ३ तीनकुंजकाबेछाररखदिया। ऐसैंयेपांचकुंजजानं। अ
गाडीवीचिमैनिजरिवाग तोवागकेच्यारूंतर्फक टिप्रमाणऊंचीफरसबंधी रहतीहै। सोमासनेकीकुंजजो
कहीतिनकीकितनीचोडीफरसहै। कीयेउत्तरफीजोयेदोन्यूंकुंजहै तोजनकी अरुसयनकी इनकेसतकेमा
फक। येपांचकुंजतोइमतरै। अवजोउरेरहावागसो जिसकेउत्तरफीदोदोकुंजहैं सोमुनूंवेसेहीफरसबंधी सो
क येकतर्फस्नानरखते। अरयेतर्फसिंगाररखते तोपरिश्रमहोय। ताते उत्तर्फरखी। सोदक्षिणतर्फकीदोकुंजमे ।
दोउनमैं दरवाजाकीसपीलकेलगिवां सोतोस्नान। अरपश्चिमतरफकीजोरही विश्रामकुंजसैंलगिवां सो
सिंगार। ऐसैंही वागकेउत्तरतर्फकी जोदोकुंजसोजानू। दक्षिदिशिझांकती। यामैपूर्वकीतर्फदरवाजाकी

जानु दुतर्फी कुंजें सो द्वारपाले नागरी तकी है सोनारी नेरे

सि॰ चं॰
१७

सपी तके लगि वांरही सो तो स्नान । अरु पछिम तर्फ जो जन कुंजके लगि वां रही सो सिंगार । ऐसै जानं । सो सा मनै कों
सके वलद वजोरखा । सो ये कुंज ए । जो नई कर्‌कप कांन मक्कालवे सें होत है । जे सैं तीन सन्मुख रही । अ तीन दछिण
रही तीन अंतर रही । ऐसै ये नो रही । पर लगि तिन मैं सात ही आई । कैसें के स्नान सिंगार दो वर कही जा से । दो वृदती
कहनें मैं नो रही सो सात की गनति वैठी । अब रहा रास कुंज सो कछु चहिये वी वृह दता तें इनके पाछे कों रख
सो सपन सन्ना मं गला १ इन तीन्यूं के सम्मान उसका ये कचो कर हा । ऐसी वृहत । ये आठ । सो ये कुंज रही कछु
दूरि तातें यहा एणे मासी को रास कनें कों आते है नित्य तो । जे जन कुंज में प्रारू करिके अरु सपन कुंज के चा
वेत वस्त्र दोम्यूं कुंजके वीचि को कोण । तहां कुंज है अक्षै वह रे । तहां सपन कुंज के वाहर चौक मेरा सर है । फि
रि सव वसन पे अरु त्ती तरिके चौक मेंस यन हो य । इहिं विधि रखी है । और स्नान सिंगार दो कर रखी हैं । के उस
कालमे तो मंगल तें ववले सो वागकी वहार करते अंतरन र्फ की स्नान कुंजके आगाडी कुंडता मैं स्नान करि सिं
गार मे जाय । ये तो उस काल की । अरु सीत काल मैं मंगल कुंज सें चलें सो कपाट खुलते जाय सो सीत रिही
सी तरि आवें । मंगल से तो विश्रा ममें आवै । अर विश्राम ते सिंगार में । सिंगार ते स्नान मे न्हा वे सो फ्हाव
हर वागा कुंड मैं स्नान नहि होय । सीत रही हमा में है । तप्त जल कुंड । सो पडदा हूटि स्नान होय । फेर सिंगार कुं

१०

नमैंसिंगार। करनेको। आरती। केरिमसताकुंजमेंजांय इसतरहरखीहै। कुंजकिसतरहकीरखीहैं। प्रथमतोचो
कजिसमेंतोइकछत्ता। अरसन्मुखपेतोइकछना। वहूतऊंचा। आरतीन्यूंतर्फडुछ्छता। सोकैसे। केपीछेकेंस
पीलताकेमणिचित्रितविताराकृति। जिसमेंवीचिकेहककमैंतोदरवजा। पीछेकोंजांपतवखुलेनहीं। तोवेमालु
म। अरदोन्यूंतरफकाहककमैंदोनिकुंजपेतोनीचेकोआदोहक। अपरकोआदोहककछतिनक। जामेंवा
हरलीतरफकरतीतोमपील। अरनीतरिकीतरफमेंखालीतिबारतांकरहरालगि। जिनमेंहककेईनागरीवेठी
हविदेखे। इसतरहतीन्यूंतरफकीमपील। सन्मुखखलासा। तिबारा। ऐसेंपच। बाराकीतरहजानू। विसमेंतिवा
रातोवीचिमेंखलासा। अरपेकेकदरचोतर्फकोनीमेंनिकुंज। पेकेकदिपामेंदोदो। अरवीचिमेंद्वार। ऐसीतरे
मैंतीन्यूंदिशामें। तीनद्वार। औरछेनिकुंज। सामनेकीखलासा जिसमेंगानेवारी। औरमध्यमेंआपसखिनपुत
कुंजकेचारहकूणनमेंचारिआलिजपरिनीचेंगमनार्थे। इसतरहकीपहसबकुंजरखीहैं सोजानूइति। औरवी
येकमेंरीमूर्खताजुनिकैंपा फकरना। येखंडपकतो। अरयापैहेदूसरा। सोकैसाहे कीवंडरदरहै। जिनकेकाचके
किवाडहैं। सोखुलतेजुडते। औरपुरसमात्रप्रमाणकिवाडछेटेरखेहैं सोखुलतेहैं। कारणकाहे। कीचतुर्मासके
कामकाजवनहे। सोइसमेंदिलन्ध्रमूजेनहीं। दूरितककीमैलऊपाकेरवरसलगेनहीं। वाचाहेजिनेकिवाडरखेहैं
॥

घो। इति। इसके उपरनी सरोवरखंड रख्यो है। सो केवलथंजाकृत कटहरा मात्र है खुलासा। कारण। ग्रीष्मकाल के का
मको है। सो ऊंचा है। सो हवा वहो तलगै। सो दिनमैं तो कस के परदाष्कि कै। रात के कारवाली। असैं तीन खण। ऐक स्थानकुं
विनां। याके दो खण है। ऐक तो नीचे। जिसमैं [illegible] स्नान वागा मैं कदी जीतरि। अर दूसरो खण जो पापैं रह्यो। सो के
वलथंजाकृत मात्र है। अं ब्रह्म संकोचन पावे पातैं। खुलासा। अर न्हातैं मे घुंघुदन लगैं। जातै छति। इति पापती
सरोखण नहीं। रीति सब वैसें ही। वीचि में तो सरोवर। चूकु दिशा वृक्ष लघु जामफलादिक। अपरि लताछा रही
सो खण समदी खे पर है नहीं।। कंर धूपता लगैं नहीं न्हातैं लता पत्ता जते। अर ज्ञ दासकुं चैंतातैं ती सरोखण पावै
नहीं। और सब तीन खण सिंगार तक। सो कु परको खण तो ग्रीष्मकाल को। अर मध्य खण वर्षाकाल को। नीचे
को खण सीतकाल को। और अस्पंत ठंड होय जो तहखाने में जहा पवन का भी संचार नहीं। और रहता है ग्रीष्म में
वी ठंडा। परंतु ये ही पर्याय अच्छी है। कि तेहखाणा का जवन होउ २० अकई सब वनन कक ह्या है श्री सीताराम वन
कहां कहां। परंतु ये ही कारण ठीक है। ऊपर ही ने परका तो ग्रीष्मकाल का दिन रात्रि दो अवशेष तम [illegible] छो। अर चतुर्मा
स में सब के बीचिका अच्छारा त्रिदिन दो अर्ध वश। अर शीतकाल में तहखाना का अच्छारा त्रिदिन दो अर्ध वर वत्तमैं
असैं जानू। मेरे मन में तो अैसाई नीकल ग्या। [illegible] विश्वजन मेरा जो अन्यत्व है इसकों तो माफ करें कहा है। आगा

२ प्र पीत यह वार्ता जो तरि ही के ऐक ही कुंज को आ जने कीक हो है न हीं तो पसे तो तीस
रे कोट मैं वट तो रु लरु पग्र हु है जिनमें सदा वाही रु लरहे अर वट रि लु के
है सो वा मे रि लु सम पर्ये आवे अर रि लु मैं दुचे सो तयार अैसे है सो।

(Left margin: सि॰ नं॰ १८)
(Right margin: २ प्र पवना रात्रि ही को दिन में वाग)

चं

रजो लवन जिसकें अनिमुत्तम कह्यो। काहे को कि मोर सदृश जो मंद प्राप्त है ग्यासो आसे समुझ गायाते। के रिड समें
नीस मुकि न वैठे तो आसम करें की येजो मध्यकत है जिस केचारि तो दास चारित पर्के। तिसमें पे के कदार के दो दो कुंजर
खे दुमर का आसे आहरिसा मे आठ कुंज नई। वीचि मे वाग जिस में सब के लि है य। लुकमीच नि ग्रह आसादिक ये
ओर वीस वल्परी तिहि। परंतु वाई मे रैन चिरही है। सो वा ही मे लावन नाप्रकास कहूं गों। इति मान सकुंज वर्णन
अथ ग्रंथ नामार्थ। या ग्रंथ को नाम श्री सीता राम रहस्य चंद्रिका राख्यो। तो प्रगट देखो जो चंद्रिका वर्णे सो पह
ली तो के सोना की अर पाछे रत्न जडे छे। तीके पाछे लाग रूमकी सो ईजा गां रत्न तो कांई छे। के या जो लावनां
मोरत्न छे सो। जडि वाको स्थान कांई छे। यो लवन छेजी में पाछे। सो नीकाकार यासूं याखर्णो की तो चंद्रिका लवन
रूप वणी। अब ई की जडाई की रीति सुणूं। कांई। के चंद्रिका के वीचि मे तो वडो रत्न जडे छे। अर आस पास छोटा
छोटा रत्न जडे छे। सो अब आगा में लावनां को प्रकर्ण। अब ग्रन्थ नाम को सो तो वडो वीचि चंद्रिका के ता तूं कह्यो
नीतिन ग्रोज्ञां णूं। तो रत्न को तो प्रकास छे। कह्यो यो लावनां को प्रकास करे छे जी सूं लावनां प्रकास रत्न छे। ई को
रंग काई हरयो। कं। राजकिसोरी को रंग पीत राजकिसोर को रंग नील। सो पीत अरु नील मिल्यां सूं हरयो होय। नी
संह सो रंग। लावनां प्रकास वीचि को रत्न जाणज्यो। अर आस पास का जो रत्न सो छादश प्रकहां। न सो छादश

,ग्रथ ना मि
कहे तो की
,प्रति प्राय
की जो ,प्राव
प्रकाश न
रीति सो ता
छ यो त याक
ही ,प्राजे मि
सवां च वर्ष
मतो कहीति
ता का ते दमु
न वे के अथ
ना मि क लि
खी

[illegible] धाम छै जां को रंग सोनो तो वां को रंग । अरु वा को प्रकाश कांई । षटरितु का विहार को प्रकास होय वां सं जी
सूं षटरितु प्रकासना वरा खां ला । अर फेर चाहिजे रूं प्रकीसो रहे छै चंद्रिका सं वारे लूमती । सोई नव वन सों वारे
विहार जनकपुर को छै सो राखां ला । इति नवविपिन आमिसायवर्नन । दोहा । नव वन रूप वर्नन करी स्वर्ण चंद्रिका
जानि । रूपसरस यह प्रथम अध्या धार जु सब की मांनि । १ । श्रीगुरु चर्ण प्रताप तें वर्नन करी निसंक । कवित दोष
गुन है जिते मैं न पिछानूं टंक । २ । अपर जीव कौं प्रा मिनहिं सु निहं रसिक सुजान । ते मम पर्ने सराहि हैं मिं लो
अग्यान । ३ । सियाराम के धाम को सेष न पावे पार । गुरु आ पुसक [illegible] छुवति जे रूपसरस सुखकार । ४ । इति
श्री श्री श्री नाम रहस्य चंद्रिका यां रूपलता ज्ञा रूपसरस चिरवितायां नववन रूप स्वर्ण चंद्रिका आ
धारमय वर्णनं नाम प्रका [illegible] समाप्तः । शुभमस्तु ॥ शुभ संवत् १९२३ माघ शुक्ले २ बुधवा
आ प्रथमो विश्रामः